✤ अमृत काल ✤

स्वावलंबन की ओर बढ़ता
भारत

स्वावलंबी भारत अभियान

स्वावलंबन की और बढ़ता भारत

कृतिः **सतीश कुमार**
अखिल भारतीय सह–संगठक,
स्वदेशी जागरण मंच

प्रो. सोमनाथ सचदेवा
कुलपति, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरूक्षेत्र, हरियाणा

सहयोग राशि
10 रू. मात्र

प्रकाशक
स्वदेशी स्वावलंबन न्यास
''धर्मक्षेत्र'', बाबू गेनू मार्ग,
सेक्टर–8, आर.के.पुरम्, नई दिल्ली–22
दूरभाषः 011–26184595
Website: www.swadeshionline.in, www.joinswadeshi.com
Email: swadeshipatrika@rediffmail.com, editor.swadeshionline@gmail.com

स्वावलंबन की ओर बढ़ता
भारत

लेखक
सतीश कुमार

प्रो. सोमनाथ सचदेवा

सार संक्षेप

- भारत, जो 1950–60 के दशक में एक बहुत पिछड़ा व गरीब देश था, वही आज वह विश्व की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।
- वर्ष 1757 से लेकर 1936 तक अंग्रेजों ने भारत से 45 ट्रिलियन डॉलर की लूट की थी। यानि अमरीका की वार्षिक जीडीपी (24 ट्रिलियन डालर) का दोगुना संपत्ति तो अंग्रेज ही भारत से लूट ले गए।
- कृषि ही भारत के युवाओं का सर्वाधिक रोजगार देने वाला क्षेत्र है। लगभग 35 प्रतिशत युवा पूरी तरह कृषि पर ही निर्भर है।
- भारत में 11 करोड़ लोग लघु–कुटीर उद्योगों से ही अपना रोजगार पाते हैं, जो कुल रोजगार का 20–22 प्रतिशत है।
- भारत को यदि पूर्ण रोजगार बनाना है तो उसे चतुष्पंक्ति मार्ग (फोरलेन रोड) को अपनाना चाहिए। 1, विकेंद्रीकरण, 2. स्वदेशी, 3. उद्यमिता, और 4. सहकारिता।
- स्थानीय इंडस्ट्री को बढ़ावा देने से ही एक मजबूत अर्थव्यवस्था का निर्माण हो सकता है।
- सहकारिता आधारित उद्योग यदि देशभर में चलते हैं तो वह देश में सामाजिक समरसता बनाए रखने के लिए भी अत्यंत उपयोगी होंगे।
- 'स्वदेशी स्वीकार–चाइनीज़ बहिष्कार' के राष्ट्रीय स्वदेशी सुरक्षा अभियान की भावना को जन–जन तक पहुंचाना होगा।
- वर्ष 2021–22 में भारत ने 14 हजार स्टार्टअप्स (पंजीकृत) प्रारंभ किए। जिसका अर्थ यह हुआ कि भारत ने प्रतिदिन 4 से अधिक स्टार्टअप शुरू किए हैं। इनमें कुल 2 हजार अरब रुपए का निवेश हुआ।
- सितंबर 2022 में देश भर में उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन किए गए। कुल 2825 कार्यक्रमों के द्वारा लगभग 5 लाख युवाओं को उद्यमिता में प्रोत्साहित, प्रशिक्षित किया गया।

स्वावलंबी भारत अभियान विचार परिवार के 16 संगठनों व अन्य 11 संगठनों का सामुहिक अभियान है। यह भारत के आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक संगठनों की एक व्यापक पहल है, जो भारत में बेरोजगारी व गरीबी को जड़ से उखाड़ फेकने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत की युवा शक्ति ही इसका संचालन कर रही है। ❑

—

प्रस्तावना

स्वावलंबन की ओर बढ़ता भारत... यह लघु पुस्तिका स्वावलंबी भारत अभियान के देशभर में फैले हुए लाखों कार्यकर्ताओं के लिए है। वास्तव में गत वर्ष जब 12 जनवरी 2022 को विधिवत रूप से यह अभियान प्रारंभ हुआ, तो उससे पहले ही प्रो. राजकुमार मित्तल (कुलपति) व मैंने, अनेक कार्यकर्ताओं से बातचीत करते हुए अभियान की वैचारिक पृष्ठभूमि व संचालन प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए, इस विषय पर 'पुनः बनाएं भारत महान', पुस्तिका का प्रकाशन हुआ था।

लगभग डेढ़ वर्ष चल चुके अभियान के बाद ऐसा अनेक कार्यकर्ताओ की और से विषय आ रहा था कि नए आंकड़े, नए तथ्य, नए विचार व अनुभव भी लिखे जाने चाहिएं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए, नए तथ्यों को समाहित करते हुए यह लघु पुस्तिका अपने कार्यकर्ताओं हेतु बनाई गई है।

प्रोफेसर सोमनाथ सचदेव व मैंने इस पुस्तिका का लेखन अवश्य किया है किंतु यह अभियान टोली के गत 2 वर्षों का सामूहिक अनुभव व तथ्यों के आधार पर एकत्र की गई सामग्री है। दक्षिण भारत व अन्य प्रकार के अपने बंधुओं को भी सुविधा हो, इसलिए इसका अंग्रेजी अनुवाद भी साथ ही छापा जा रहा है।

बेरोजगारी की समस्या के प्रति दृष्टिकोण की "नौकरी ही रोजगार होता है, रोजगार देना केवल सरकारों का काम है और हम युवाओं को केवल पढ़ाई लखाई करके सरकार से नौकरी मांगनी है (अपने से उद्यमिता आदि हमें नहीं सोचना)'' ऐसी भ्रमित अवधारणाएं (नैरेटिव) इस समय पर अपने युवाओं के मन मस्तिष्क में बैठी हैं, यही वास्तव में भारत की बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण भी है।

देशभर में सभी जिलों में अपने कार्यकर्ता इस समस्या के व्यापक और पूर्ण समाधान के लिए दिन रात लगे हुए हैं। प्रस्तुत पुस्तिका उनको आंकड़े और तथ्य समझने, समझाने में सहायक होगी। फिर सामान्य कार्यकर्ता गहरे आर्थिक विषयों को सहज समझ व सरल भाषा में रख पाए, इसलिए इस पुस्तिका की भाषा अत्यंत सरल रखी गई है। और केवल वहीं आवश्यक आंकड़े, जो बेरोजगारी की समस्या व समाधान विषय हेतु आवश्यक हैं, को ही इसमें स्पर्श किया गया है। जो अर्थशास्त्री हैं, नीति निर्माता हैं, उनके लिए अलग से लेखन आदि रहेगा।

फिर भी यह सब वर्गों को पठनीय हो, इसका भी ध्यान रखते हुए इसकी सामग्री और शब्दावली बनाई गई है। आशा है देश भर के बेरोजगारी के समाधान में लगे हुए कार्यकर्ताओं को यह पुस्तिका अत्यंत उपयोगी लगेगी और वे अधिक गति व उर्जा के साथ अभियान को सफल बनाने में जुटेंगे, ऐसा विश्वास है।

— **सतीश कुमार**

स्वावलंबन की ओर बढ़ता भारत

अभी–अभी देश ने अपना 'अमृत महोत्सव' (भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष) मनाया है और अब अमृत काल प्रारंभ हुआ है। अर्थात 2047 तक की यात्रा, जब भारत स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा। ऐसे में भारत कैसा हो? इसकी सब तरफ चर्चा शुरू हुई है। अन्य विषयों के अतिरिक्त सबसे प्रमुख बात यह है कि भारत को 'स्वावलंबी' बनना होगा, अपने पैरों पर खड़ा होना होगा। कोई भी विश्व का नेतृत्व करने की सोच रखने वाला देश यदि गरीबी, बेरोजगारी से त्रस्त हो, अपनी आर्थिक प्रक्रियाओं के लिए विदेशी कंपनियों और विदेशी ताकतों पर निर्भर हो, तो वह विश्व के लिए प्रेरणादायी नहीं बन सकता। इसी विषय को ध्यान में रखकर गत 2 वर्षों से भारत में 'स्वावलंबी भारत अभियान' चल रहा है। जिसे भारत के शीर्ष आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक संगठन चला रहे हैं। यह एक गैर राजनीतिक, गैर सरकारी, पहल है जो वास्तव में भारत की युवा शक्ति ही चला रही है।

75 वर्षों की भारत की सफल यात्रा

भारत की बेरोजगारी इस समय पर भारत की सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है। यद्यपि भारत ने गत 75 वर्षों में अनेक मोर्चों पर सफलता प्राप्त की है लेकिन भारत की अर्थव्यवस्था जो 1950–60 के दशक में विश्व स्तर पर कहीं नहीं थी, वहीं आज वह विश्व की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन गयी है। 3.5 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था वाला भारत 7 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि के साथ जी–20 देशों में सबसे गतिमान अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है।

भारत की सड़कें आज विश्व स्तर की बन रही हैं। उन्नत ढांचा है, डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया की सारे विश्व में चर्चा है। हां, किंतु यह भी सच है कि भारत में असमानता भी बढ़ी है। पर्यावरण का खतरा भी बढ़ा है और सबसे बड़ी बात है कि बेरोजगारी की समस्या का समाधान नहीं हुआ है।

भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic dividend)

भारत के पास युवा शक्ति पर्याप्त है। 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग में ही भारत में 37 करोड़ युवा है जो अन्य किसी भी देश में नहीं है। प्रतिमास 9 लाख युवा 18 वर्ष आयु पार कर रहे हैं। यद्यपि भारत का जन्म दर (फर्टिलिटि रेट) अभी से

2.0 आ गया है। (जो 2.1 रिपलेसमेंट लेवल) से भी कम है, फिर भी भारत के आगामी 20 वर्ष तक भी युवा बने रहने की स्थिति है। यह वास्तव में भारत की सबसे बड़ी धरोहर होनी चाहिए थी, किंतु आज यह सबसे बड़ी चुनौती बन गया है। क्योंकि हम अपने युवाओं को रोजगार की प्रक्रिया में नहीं ला पा रहे हैं। अभी पिछले दिनों ही सीआईआई (चेंबर ऑफ इंडियन इंडस्ट्री) की एक रिपोर्ट आई है, जिसके अनुसार अगर भारत अपनी सारी युवा शक्ति को रोजगार उपलब्ध करवाने में सफल हो जाए तो भारत 40 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था (2047 तक) बन सकता है। इस समय पर विश्व की सर्वोच्च अर्थव्यवस्था अमेरिका भी केवल 24 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था है, अर्थात अगर भारत अपने जनसांख्यिकीय लाभांश को ठीक से रोजगार की प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए आर्थिक उन्नति में बदलता है तो हम विश्व में सबसे अधिक संपन्न देश हो सकते हैं।

वास्तव में स्वावलंबी भारत अभियान का पहला उद्देश्य ही यही है कि भारत पूर्ण रोजगारयुक्त हो। दूसरा उद्देश्य है कि भारत में गरीबी रेखा (Below Poverty Line - BPL), जो अभी 16–17 प्रतिशत हैं, वह शून्य पर चली जाए और तीसरा, वर्ष 2030 तक ही भारत 10 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बन जाए। हां, पर्यावरण का संरक्षण करते हुए। क्योंकि यह पर्यावरण हितैषी विकास की हमारी हमेशा से सोच रहती ही है।

भारत में बेरोजगारी एक विकराल समस्या

युवा भारत सब प्रकार से आगे बढ़ रहा है। इसी वर्ष हम लोगों ने कुल आबादी के मामले में चीन को पीछे कर दिया है। 140 करोड़ जनसंख्यां (विश्व जनसंख्या घड़ी के अनुसार) भारती की हो गई है। चीन से 30–35 लाख अधिक है, 1 फरवरी 2023 के अनुसार। आज संपूर्ण विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश भारत ही है और उसमें भी प्रसन्नता का विषय यह है कि भारत अभी जनसंख्या लाभ के दौर से अगले 20 वर्ष भी गुजरेगा। किंतु यह भी एक कटु सत्य है कि भारत में इस समय बेरोजगारी लगभग 8.0–8.2 प्रतिशत से भी अधिक है, जो जी–20 के देशों में सबसे अधिक है। भारत में लगभग 9 लाख युवा प्रतिमाह जॉब मार्केट में आ रहे है और वह स्नातक या परास्नातक की डिग्री अभी ले रहे है, भारत का हायर एजुकेशन में ग्रॉस इनरोलमेंट प्रतिशत बढ़ा है, वह अब लगभग 30 प्रतिशत के आसपास है। 4 करोड़ से अधिक युवा इस समय पर हायर एजुकेशन में पढ़ाई कर रहा है किंतु बेरोजगारी की मार, गांव हो या शहर, कम

पढ़ा लिखा हो या परास्नातक, सब आय वर्गों और सब प्रदेशों में है। जिन प्रदेशों का औद्योगिकीकरण काफी अच्छा हुआ है, जैसे तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, वहां बेरोजगारी निश्चित रूप से कम है। फिर संयोग से इन्हीं प्रदेशों में टीएफआर (Total Fertility Rate, प्रति विवाहिता बच्चे) कम होने से इनमें युवा जनसंख्या भी कम है। इसलिए इन प्रदेशों के उद्योगों में बड़ी मात्रा में उत्तर पूर्व और पूर्वोत्तर के युवा आते हैं, क्योंकि उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, असम, बंगाल आदि प्रदेशों में औद्योगिकरण बहुत कम है और वहां जनसंख्या अधिक है, इसलिए वहां से बड़ी मात्रा में युवाओं का दिल्ली से लेकर चेन्नई तक के महानगरों में पलायन होता रहता है। रोजगार की खोज में अपने घर से बहुत दूर 14–15 हजार रुपये कमाने वाला युवक किसी प्रकार से अपने परिवार, समाज व देश को योगदान देने की स्थिति में ही नहीं रहता। वह किसी तरह से दो जून की रोटी के अलावा कुछ विशेष सोच सके या अपने घर पर इतना पैसा भेज सके कि मां–बाप या परिवार में बच्चे ठीक से पढ़ सके, ऐसा संभव ही नहीं होता।

बेरोजगारी है भारत का सबसे बड़ा दर्दः सर्वे

अभी जनवरी 2023 में भारत की प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका 'इंडिया टुडे' ने बड़ा सर्वेक्षण करवाया। उसने जब पूछा कि सबसे बड़ी समस्या आप किसको मानते हैं तो स्वाभाविक रूप से 26 प्रतिशत भारत के युवाओं ने सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी ही बताया। 4 माह पूर्व जब वायु सेना में अग्निवीर की 730 नौकरियां निकली तो उसके लिए करीब 20 लाख से अधिक युवाओं ने आवेदन किया। जो यह संकेत बताने के लिए पर्याप्त हैं कि भारत में बेरोजगारी किस कदर भयावह रूप लिए हुए हैं। इसके अतिरिक्त भी सीएमआईई (CMIE) के सप्ताहिक सर्वेक्षण भी बता रहे हैं कि अलग–अलग मास पर थोड़ा कम ज्यादा होगा, पर कुल मिलाकर 8 से 9 प्रतिशत बेरोजगारी की दर बहुत भयावह है। भारत सरकार या नीति आयोग के अलग से आंकड़े तो प्रकाशित नहीं हो रहे किंतु एक बात सब मानते हैं कि भारत में बेरोजगारी बहुत बड़ी चुनौती है और इसको ठीक करने के लिए कोई व्यापक प्रयत्न करने चाहिए।

गरीबीमुक्त भारत बनाना होगा

गरीबी भी एक बड़ा कारण है चिंता का। यद्यपि भारत ने इस विषय में गत 75 वर्षों में काफी प्रगति की है किंतु जो देश विश्व की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था

बना हो, जिस देश में विश्व के नेतृत्व करने की महत्वपूर्ण क्षमता हो, उसकी 16–17 प्रतिशत जनता यानि लगभग 20 करोड़ से अधिक आबादी, यदि गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रही हो, तो यह अच्छी स्थिति तो बिल्कुल नहीं है। सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में ही नहीं, नगरीय क्षेत्रों की स्लम बस्तियों में भी गरीबी मुंह बाए खड़ी है। मुंबई महानगर का 40 प्रतिशत क्षेत्र स्लम क्षेत्र है, तो दिल्ली का भी लगभग 25 प्रतिशत स्लम क्षेत्र है, यही बात बाकी महानगरों जैसे बेंगलुरु, चेन्नई, कोलकाता, लखनऊ, भोपाल आदि की भी है।

गरीबी के कारण ही कुपोषणता का भी एक बड़ा असर भारतीय बच्चों पर दिख रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 121 देशों की सूची में भारत वर्ल्ड हंगर इंडेक्स के हिसाब से 107वें नंबर पर हैं, यानि हम बांग्लादेश जैसे छोटे और हमारे से ही निकले हुए देश से भी पीछे हैं। जब पर्याप्त मात्रा में और अच्छा भोजन नहीं मिलता तो बच्चों का बौद्धिक विकास पूरा नहीं होता, आयु छोटी रहती है, कद छोटा रहता है। ऐसा कुपोषित बच्चा बड़ा होकर बीमारियों से ग्रस्त रहता है। वह देश का योग्य और योगदान करने वाला नागरिक न बनकर समस्याओं का एक बिंदु बन जाता है। इस गरीबी और कुपोषण की भी हमें समाधान करने की कोई व्यापक योजना सोचनी होगी।

कुछ अन्य चुनौतियां

इसके अलावा शिक्षा भी एक चिंता का विषय है। यद्यपि साक्षरता दर भारत की 90 प्रतिशत से ऊपर हो गई है किंतु गुणवत्ता वाली शिक्षा का सर्वथा अभाव है। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर सरकारी स्कूलों में शिक्षा का प्राथमिक स्तर बहुत ही सामान्य है। इन विद्यालयों से निकला हुआ विद्यार्थी आवश्यक योग्यता, क्षमता का विकास नहीं कर पा रहा है। इतना ही नहीं जो हायर एजुकेशन का एनरोलमेंट है वह भी 27–28 प्रतिशत तक ही है। जबकि विश्व के अनेक देशों में यह आंकड़ा 70 प्रतिशत तक तो अवश्य ही जाता है। इतना ही नहीं जो कौशल विकास का कार्य भारत में प्रारंभ हुआ, वह भी कोई बहुत आशा प्रदान नहीं करता। क्योंकि जो कौशल (स्किल) विकास केंद्र खुले उनका स्तर बहुत सामान्य रहा। परिणामस्वरूप स्किल किया हुआ है, ऐसे सर्टिफिकेट लिए हुए करोड़ों लोग हैं किंतु न तो उन्हें कोई नौकरी मिलने की संभावना है और न ही उनका कौशल ऐसा कोई विकसित हो पाया है कि वह स्वरोजगार अपनाकर उद्यमी बन सके। भारत में स्किलिंग कौशल विकास का प्रमाण पत्र लिए एक करोड़ से अधिक बेरोजगार है। उद्यमिता के प्रति तो अभी सारे

देश में शिक्षा अथवा जागरण बहुत ही प्रारंभिक स्तर का ही है।

फिर असमानता के मामले में भी एक बड़ी चुनौती भारत के सामने है। ऑक्सफॉर्म की जो रिपोर्ट आई है उसके अनुसार भारत विश्व के सर्वाधिक असमानता वाले देशों में से है। भारत की 1 प्रतिशत जनता के पास नीचे की 80 प्रतिशत लोगों की संपत्ति है। 21 बड़े उद्योगपतियों के पास ही 70 करोड़ लोगों की संपत्ति के बराबर संपत्ति है। इससे समाज में विघटन व क्षोभ बढ़ता है। समाज को विघटन से बचाने के लिए और एक सुदृढ़ समाज के गठन के लिए आय के समान वितरण अथवा न्यूनतम असमानता रहनी चाहिए।

भारत की आर्थिक स्थिति व रोजगार का सिंहावलोकन

जब हम भारत की आर्थिक और रोजगार की स्थिति के बारे में विचार करते तो हमें अपनी पिछली स्थिति देखनी होती है। भारत लगभग 10 हजार वर्षों से एक उत्तम और समृद्ध अर्थव्यवस्था के रूप में ही विश्व में विख्यात रहा है। अनेक बार प्रोफेसर एंगस मेडिसन, जो लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स के प्रोफेसर थे और वर्ल्ड बैंक की स्टडी के अंतर्गत ही उन्होंने बड़ी रिपोर्ट बनाई थी, की चर्चा होती है। उन्होंने 30 से अधिक अर्थशास्त्रियों के साथ मिलकर अनेक वर्ष अध्ययन करते रहे। अपनी रिपोर्ट 'मिलेनियम पर्सपेक्टिव–2000 ईयर हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड इकानोमी' में स्पष्ट लिखते हैं कि शून्य ईस्वी (ए.डी.) से लेकर 1500 तक भारत विश्व उत्पाद का 33 प्रतिशत तक हिस्सा देता था। सब प्रकार के आक्रमणकारी व अंग्रेजों द्वारा हमारे अर्थ तंत्र को तोड़ने के बाद भी यह 1720 ईस्वी में 24 प्रतिशत व 1870 तक भी 12 प्रतिशत तक था और 1947 में यह 2 प्रतिशत से भी कम रह गया, जो आज 4 प्रतिशत के आसपास है।

केवल यही एक बड़ा अध्ययन नहीं है, बाद में उत्सा पटनायक (एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री), जिन्होंने कैलिफोर्निया में रहकर गहन अध्ययन के पश्चात रिपोर्ट दी। उनका कहना है कि 1757 से लेकर 1936 तक अंग्रेजों ने, जो विभिन्न प्रकार से टैक्स व अन्य तरीकों से भारत से लूट की, उसकी मात्रा 45 ट्रिलियन डॉलर तक की है। अमेरिका जो विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, वह भी अभी केवल 24 ट्रिलियन डालर की है। यानि अमरीका की वार्षिक जीडीपी का दोगुना जितनी संपत्ति तो अंग्रेजों ने ही लूटी। कहने का अर्थ यह है कि भारत में इतनी समृद्धि रही है, इसके कारण से भारत में बेरोजगारी का तो प्रश्न ही नहीं उठता था।

भारत एक समृद्ध, विकेंद्रित, ग्रामोद्योग आधारित अर्थव्यवस्था रही है, जो कि पर्यावरण का भी संरक्षण करते हुए उत्पाद करता था और विकास का एक सतत प्रतिमान विश्व में स्थापित किया था। संस्कृत में बेरोजगारी के लिए पर्यायवाची शब्द तक भी मिलता नहीं है। बेरोजगारी प्रमुख रूप से अंग्रेजों के आगमन के पश्चात भारत में फैली। जब हमने 'उत्तम खेती, मध्यम व्यापार, निम्न चाकरी' की प्रक्रिया को नकारना शुरू किया। अंग्रेजों को अपना राज्य यहां पर स्थापित करने के लिए बड़ी मात्रा में अंग्रेजी बोलने वाले और उनके आदेशों का पालन करवा सकने वाले नौकरों की आवश्यकता थी। अतः उन्होंने न केवल मासिक वेतन देकर नौकर रखने प्रारंभ कर दिए, बल्कि उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा भी दिलवाई। धीरे–धीरे अंग्रेजों का नौकर बनना, यह उच्च जीवन का प्रतीक बनने लग गया और भारतीय युवा स्वरोजगार, उद्यमिता के स्थान पर नौकरी की तलाश करना प्रारंभ करने लगे। 1947 में देश की स्वतंत्रता के पश्चात भी इस व्यवस्था को पलटने का जो प्रयत्न होना चाहिए था, वह हमारे राजनीतिज्ञों ने किया नहीं। बल्कि उसी नौकरी को ही रोजगार की परिभाषा बताकर, 'हम तुम्हें अधिक नौकरियां देंगे', ऐसा आश्वासन देकर वोट बटोरने के खेल में लग गए। जबकि सत्य यह है कि भारत में आज भी संगठित क्षेत्र में सरकारी व गैर सरकारी मिलाकर 8 प्रतिशत से अधिक नौकरियां हैं ही नहीं। यही भारत में बेरोजगारी का मूल कारण भी है। गत 75 वर्षों में लगातार अनेक दलों की सरकारें प्रयास करने पर भी इसलिए पूर्ण रोजगार नहीं दे पा रही, क्योंकि वह 8–10 प्रतिशत के सरकारी व प्राइवेट नौकरियों के मार्ग को ही केवल रोजगार मानते हैं। दैनिक वेतनभोगी, ठेके प्रथा वाली, मनरेगा, गैस्ट आदि भी अतिरिक्त 10–12 प्रतिशत से ऊपर नहीं जाती।

बेरोजगारी को देखने का दृष्टिकोण ही समस्या

कई बार समस्या को देखने का दृष्टिकोण ही वास्तव में बड़ी समस्या होता है। यही बात भारत की बेरोजगारी के संदर्भ में भी है। सबसे पहले तो यही कि रोजगार की परिभाषा हमारे यहां गलत है। सामान्य व्यक्ति, युवा, सरकारी नौकरी अथवा बड़ी कंपनी की नौकरी को ही रोजगार मानता है और वह भी संभव हो तो घर के निकट ही। यह मानसिकता उसको सबसे पहले बेरोजगार बनाने का काम करती है। फिर सरकार की नीतियां तो अनेक हैं, किंतु उसकी जानकारी नीचे तक पहुंचती नहीं। सुस्त सरकारी तंत्र अच्छी योजनाओं को भी लागू नहीं करवा पाता।

प्रोत्साहन व जानकारियों के अभाव में वे युवा किसी भी स्तर की नौकरी मिल जाए, इस खोज में भटकते रहते हैं और अपने आपको बेरोजगार बताते रहते हैं। इसके अतिरिक्त भी उद्यमिता के प्रति प्रोत्साहन कम होना। पारिवारिक व सामाजिक परिवेश की उदासीनता। बैंकों व सरकारी बाबुओं की सुस्ती व भ्रष्टाचार भी स्वरोजगार व उद्यमिता के मार्ग की रूकावटे हैं।

कृषिः रोजगार का प्रमुख क्षेत्र

इतने वर्षों बाद आज भी कृषि ही भारत के युवाओं का सर्वाधिक रोजगार देने वाला क्षेत्र है। लगभग 35 प्रतिशत युवा इसमें लगे हैं, जो पूरी तरह कृषि पर ही निर्भर है। हां, यह बात अलग है कि उनकी आय का स्तर बहुत कम है। उसका प्रमुख कारण कृषि को घाटे का सौदा मानना है। यद्यपि गत कुछ वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों में ढांचागत विकास काफी हुआ है। सड़कें भी अब सुदूर गांव तक पहुंची हैं। बिजली भी 24 घंटे मिलती है, टेलिफोन कनेक्शन, मोबाइल, वाईफाई की कनेक्टिविटी हो गई है, इसके कारण से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़े हैं। अनेक स्टार्टअप भी कृषि क्षेत्र में आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त भी (एलाइड एक्टिविटीज) सहायक कार्य जैसे मधुमक्खी पालन, गाय पालन, फूल उत्पादन, मुर्गी पालन आदि–आदि अनेक प्रकार के कार्य अच्छी आय देने वाले हैं। देशभर में इस तरफ कार्य हो रहा है।

एक बहुत बड़ा क्षेत्र मछली उत्पादन का भी है। भारत की समुद्री सीमा 4300 किलोमीटर लंबी है किंतु भारत ने अपने मत्स्य क्षेत्र को, समुद्री क्षेत्र को, जितना गहराई से नापना चाहिए था वैसा नहीं किया। हमें यह सब करना होगा क्योंकि केवल पारंपरिक खेती से कार्य चलने वाला नहीं। अगर हमारे युवा तेजी से एफपीओ, नए–नए प्रकार के फसलें और सहायक गतिविधियों में तेजी से जाएं, वहां नए स्टार्टअप लगाएं, छोटे बड़े एफपीओ चलाएं, तो निश्चित रूप से कृषि क्षेत्र व ग्रामीण क्षेत्र आय का बहुत बड़ा साधन हो सकता है। इस समय के हमारे खाद्य निर्यात में 45 प्रतिशत तक का हिस्सा कृषि के सहायक वर्गों में से ही निकलता है। अपेडा (APEDA) की एक रिपोर्ट के अनुसार 1,85,000 करोड़ का निर्यात तो इन्हीं चीजों का होता है। सरकार के अतिरिक्त समाज को इस विषय पर ध्यान करना होगा तो निश्चित रूप से कृषि व ग्रामीण क्षेत्र में हम अपने युवाओं को अपनी आय अधिक करने के लिए और वही गांव में ही रहते हुए सुविधाएं देते हुए उन्हें अपना नवीन रोजगार सृजन व आय वृद्धि हेतु तैयार कर सकते हैं।

लघु व कुटीर उद्योग ही हैं भारत की रीढ़ की हड्डी

इस समय जो भारत का निर्यात है, उसमें 45 प्रतिशत तक योगदान लघु एवं कुटीर उद्योगों से निर्मित वस्तुओं का ही रहता है। भारत का लघु एवं कुटीर उद्योग शायद विश्व का सबसे बड़ा उद्योग क्षेत्र है। भारत में 4000 से अधिक छोटे–बड़े उद्योग समूह (क्लस्टर) क्षेत्र हैं। जब बड़े उद्योग लगते हैं तो उन्हें भी ठीक से चलाने के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों की सहायता की आवश्यकता होती है। भारत सरकार ने भी विभिन्न योजनाएं इसको प्रोत्साहित करने के लिए की हैं। वैसे भी भारत एक पारंपरिक देश है। परंपरा से पुत्र अपने पिता का उद्योग चलाना सीखता है और आगे बढ़ाता है। वह चाय की दुकान हो, अथवा हाथ से करने वाले काम हो या छोटे उद्योग, इस समय भारतीय युवाओं में इसका प्रचलन बढ़ा है। 500 से अधिक कंपनी रजिस्ट्रेशन प्रतिदिन हो रही है। जीएसटी का बढ़ता कलेक्शन भी इस बात का संकेत है कि भारत में लघु एवं कुटीर उद्योगों की अच्छी बढ़त हो रही है। इसे और बढ़ाना ही होगा। आज हमारे 11 करोड़ लोग इन्हीं लघु कुटीर उद्योगों से ही अपना रोजगार पाते हैं। हमारे कुल रोजगार का 20–22 प्रतिशत तक इसी क्षेत्र से आता है।

भारत की पूर्ण रोजगार की यात्रा में सरकार की नीतियां एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यद्यपि इस समय सरकार रोजगार सृजन के लिए भरपूर परिश्रम कर रही है किंतु कुछ व्यवस्था की पुरानी बीमारी इतनी अधिक है कि स्वरोजगार और उद्यमिता अच्छे से भारत में अपनाना ही कठिन हो गया है।

उदाहरण के लिए एक प्रदेश के किसी भी एक स्थान पर यदि किसी युवा को ब्रेड बनाने की फैक्ट्री लगानी है और उसके पास 20 लाख रू. भी हैं और नजदीक के गांव में उसके मित्र के पास चार–पांच एकड़ जगह भी है, फिर भी उसे सरकार से अनुमति लेने में लगभग 22–23 दफ्तरों में जाना पड़ता है। न्यूनतम 7–8 महीने का समय लगता है। (लेखक के मध्य प्रदेश में व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर)। ऐसे में कोई नया व्यक्ति रोजगार कैसे प्रारंभ करें? छोटे–मोटे काम करने के लिए भी अलग–अलग प्रकार की रुकावटें हैं। सामान्यतः जिसको 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' कहा जाता है, वह बहुत कमजोर है। सिंगल विंडो व्यवस्था यद्यपि बनाई गई है लेकिन वह काम नहीं करती। विभिन्न बैंकों से लोन लेना अपने आप में एक दुष्कर कार्य है। वर्तमान केंद्र सरकार ने इस विषय पर यद्यपि काफी काम किया है किंतु अभी वह सब पर्याप्त नहीं है। अंतरराष्ट्रीय

रैंकिंग, व्यापार सुगमता (इज ऑफ डूइंग बिजनेस) की बात करें तो उसमें भारत जो वर्ष 2014 में 190 देशों की सूची में 142वें स्थान पर था, उसमें अब सुधार होकर 2022 में 63वें स्थान पर आ गया है।

आवश्यकता है कि भारत पहले 15 या 20 देशों में ही रहना चाहिए। जितना ज्यादा हम अपनी सरकारी मशीनरी को सरल करेंगे, उतना ही रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। लघु, कुटीर उद्योग, स्टार्टअप, एफपीओ आदि को खड़े करने में सुविधा होगी।

डिजिटल इकोनामीः भारत का भविष्य

यद्यपि एक नकारात्मक धारणा भी भारत के युवाओं और अर्थशास्त्रियों में रहती है कि यदि हम डिजिटल प्रक्रिया में जाएंगे तो रोजगार के अवसर कम होंगे। किंतु ऐसा नहीं है। यदि हम डिजिटल इकोनामी अथवा नए प्रकार के प्रोडक्ट नहीं लाएंगे, ए.आई. रोबोटिक्स पर नहीं जाएंगे, तो हम अर्थ व रोजगार के क्षेत्र में बुरी तरह से पिछड़ सकते हैं। भारत को इस मार्ग पर तेजी से जाना चाहिए। भारत के युवाओं में यह क्षमता है। फिर भारत में जितनी तेजी से ग्रामीण क्षेत्र में ढांचागत विकास, बिजली, वाईफाई और मोबाइल नेटवर्क हो रहा है, हम उससे इस विषय में विश्व के अग्रणी हो रहे हैं। भारत का यूपीआई ट्रांजैक्शन सिस्टम विश्व में सब जगह विश्वसनीयता प्राप्त कर रहा है। भारत में जितना ट्रांसजेक्शन डिजिटल माध्यम से होने लगा है, उतना अमेरिका और चीन में मिलकर भी नहीं होता। गत वर्ष भारत में 720 लाख करोड़ रुपए का डिजिटल ट्रांसजेक्शन हुआ है। भारत को यदि एक ट्रिलियन डॉलर के आईटी सॉफ्टवेयर एक्सपोर्ट करने का लक्ष्य रखना है तो डिजिटल इंडिया जैसे अनेक कार्यक्रम हमें प्रारंभ करने ही होंगे। भारत के युवा इस विषय में विश्व के युवाओं की अपेक्षा अधिक कुशल भी हैं। इसे हमारी विशेषता और ताकत मानना चाहिए और शीघ्रता से डिजिटल इकोनामी की तरफ बढ़ना चाहिए। भारत के रिजर्व बैंक ने अपनी डिजिटल करेंसी मार्केट में उतार भी दी है, जोकि धीरे–धीरे प्रचलित हो रही है।

नयी टेक्नोलॉजी से घबराएं नहीं।

अनेक लोगों का मत है कि नई टेक्नोलॉजी हमारे रोजगार खा जाएगी, किंतु यह पूर्णतया सत्य नहीं है इसी तर्क के आधार पर हमने अनेक वर्ष ऑनलाइन मार्केटिंग में अमेजॉन और फ्लिपकार्ट जैसी विदेशी अमरीकी कंपनियों के हाथों

अपना बाजार गंवा दिया। किंतु आज जब भारत सरकार ने ओएनडीसी को उतारा है तो ऐसा लग रहा है कि हम छोटे कस्बों व गांव स्तर तक भी ऑनलाइन मार्केटिंग कर सकते हैं और संपूर्ण देश में रोजगार सृजन के नए अवसर जोड़ सकते हैं। यद्यपि टेक्नोलॉजी की सीमा है तो भी भारत को इस समय पर सब प्रकार के टेक्नोलॉजी का संतुलित उपयोग करते हुए अपने रोजगार और अर्थ सृजन के अवसरों को खोजना ही होगा।

पूर्ण रोजगार का चतुष्पंक्ति मार्ग

भारत के अर्थशास्त्री व रोजगार सृजक गत 70–75 वर्षों के अनुभव के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंच रहे हैं कि भारत को यदि पूर्ण रोजगार के अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है तो उसे चतुष्पंक्ति मार्ग (फोरलेन रोड) को अपनाना चाहिए। यह चतुष्पंक्ति मार्ग हैं – 1, विकेंद्रीकरण, 2. स्वदेशी, 3. उद्यमिता, और 4. सहकारिता। भारत के विशाल जनसंख्या, विविधतापूर्ण भौगोलिक परिस्थिति व पारंपरिक अर्थव्यवस्था और भारत के देश भर में फैले 6 लाख से अधिक गांव का यदि समग्र चिंतन करेंगे तो निश्चय ही यह स्वभाविक रूप से लगेगा कि दिल्ली जैसे केंद्र में बैठकर इतने विशाल जनसंख्या वाले देश की केंद्रित अर्थव्यवस्था का संचालन उपयोगी नहीं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जो जनसंघ के अध्यक्ष थे व एकात्म मानव वाद के प्रणेता थे, उन्होंने स्वयं एक बार कहा था कि भारत की अर्थव्यवस्था को दुरुस्त करना हो और दो ही शब्द बोलने हो तो वह हैं – विकेंद्रीकरण और स्वदेशी।

अभी हमारा 45 लाख करोड़ रुपए का बजट है। केंद्र में और फिर राज्यों में बनी हुई योजनाएं और उन योजनाओं को क्रियान्वयन करने के लिए संपूर्ण देश से विभिन्न माध्यमों से एकत्र किया गया कर (टैक्स), यह सारी प्रक्रिया को निशप्राण कर देता है। भ्रष्टाचार को जन्म देता है। यद्यपि 1986 में राजीव गांधी जी द्वारा पंचायती राज लाया गया, किंतु सीधे ग्राम स्तर पर यह क्रियान्वयन अव्यवहारिक है। वास्तव में जिला ही इस विकेंद्रीकरण का व्यवहारिक और वास्तविक केंद्र बिंदु होना चाहिए। रोजगार सृजन की सब प्रकार की आर्थिक रचनाएं, योजनाएं, जिला स्तर पर ही बननी चाहिए। इस दिशा में कार्य, अनेक प्रांतों में प्रारंभ भी हुआ है। वन डिस्टिक वन प्रोडक्ट (ओडीओपी) प्रारंभिक बिंदु हो सकता है। उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने जिलों की जीडीपी मैपिंग की प्रक्रिया भी प्रारंभ की है, प्रत्येक जिले को उसके संसाधन, उसके उपलब्ध जनसंख्या, उसके

उपलब्ध विशेषताएं, इंडस्ट्री, कॉलेज, पॉलिटेक्निक, महाविद्यालय, इसका हिसाब लगाते हुए, मैपिंग करते हुए यदि योजना बनी तो बहुत बड़ी मात्रा में रोजगार सृजन होगा और अति मजबूत अर्थव्यवस्था भी निर्माण हो सकेगी। प्रांत और केंद्र उन जिलों में सहायक होने का तत्व बने। जिला केंद्रित रोजगार आधारित अर्थव्यवस्था का मॉडल भारत की आर्थिक और रोजगार गतिविधियों में वृद्धि का कारण बनेगा, ऐसा अनेक अर्थशास्त्री मानते हैं। यहां तक कि चीन ने भी अनेक विषयों में विकेंद्रीकरण अपनाया हुआ है, यद्यपि अवधारणा इसके विपरीत है। प्रधानमंत्री के दो आर्थिक सलाहकार अर्थशास्त्री विवेक देवराय व संजीव सान्याल भी विकेंद्रित अर्थव्यवस्था के ही पक्ष में हैं।

उद्यमिता ही मार्ग है

उद्यमिता भारत के सहज स्वभाव में है। जिस समय पर भारत विश्व उत्पाद का 34 प्रतिशत तक उत्पादन कर रहा था, तो यह स्वभाविक ही समझ में आने वाली बात है कि वह गांव–गांव में उद्यम आधारित अर्थव्यवस्था के कारण ही था। भारत ग्रामोद्योग आधारित अर्थव्यवस्था रहा है। तभी बड़ी मात्रा में अर्थ का सृजन संभव हुआ। नौकरी की मानसिकता और रोजगार यानि जॉब का विचार (कंसेप्ट), तो अंग्रेजों के शासन काल में ही भारत का विमर्श बना है। आज भारत का सामान्य नवयुवक चाहे वह आईटीआई में पढ़ता हो, या किसी अच्छे आईआईटी में, वह नौकरी की मानसिकता ही पाले बैठा है। इस विषय में उनके प्रमाण में फर्क हो सकता है, दिशा में नहीं।

किंतु भारत को उच्चतम अर्थव्यवस्था की तरफ ले जाने के लिए प्रत्येक विषय में उद्यमिता (एंटरप्रेन्योरशिप) की आवश्यकता होगी। इस विषय में नई शिक्षा नीति बहुत उपयोगी व सार्थक है, किंतु उसे लागू करने में 15–20 वर्ष लगने की संभावना है। इसलिए भारत के युवाओं को अभी से उद्यमिता की तरफ मोड़ने के लिए व्यापक प्रयत्न व उद्यमिता का विमर्श (नैरेटिव) खड़ा करना होगा। वैसे भी उद्यमिता से ही मनुष्य अपनी आंतरिक शक्तियों को पूर्णरूपेण बाहर लाने का प्रयत्न करता है। अपना उद्यम व बड़ी कमाई की सोच की किसी युवक को कठिन परिश्रम करने, रिस्क लेने, योजना करने, नया खोजने को प्रेरित करती है। 9 से 5 बजे की नौकरी वाला मनुष्य अपनी प्रतिभाओं को कुंठित कर लेता है। छोटी सोच रखकर, नौकर की मानसिकता बनाकर कोई भी देश या समाज बड़ी अर्थव्यवस्था नहीं बन सकता।

उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक प्रदेश सरकारें, केंद्र सरकार, अनेक संस्थाएं एवं अनेक व्यक्ति, उद्यमिता प्रोत्साहन के विभिन्न प्रकार की योजनाएं व प्रयोग कर रहे हैं। भारत फिर से उद्यमिता के मार्ग पर चल पड़ा है। इस उद्यमिता की तरफ बढ़ती गति को और तीव्र करने की आवश्यकता है। भारत में इस समय पर प्रतिदिन 500 कंपनियों का रजिस्ट्रेशन हो रहा है। भारत 82000 स्टार्टअप के साथ विश्व का तीसरा बड़ा इकोसिस्टम बन गया है। उद्यमिता पर बढ़ते भारत को अपनी गति व दिशा न केवल बनाए रखनी होगी, बल्कि उसकी गति को बहुत बढ़ाना भी होगा।

स्थानीय व स्वदेशी

यह तो अब सब सरकारें स्वीकार करने लगी हैं कि स्थानीय इंडस्ट्री को बढ़ावा देने से ही एक मजबूत अर्थव्यवस्था का निर्माण हो सकता है। इसलिए भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बार–बार 'वोकल फॉर लोकल' और आगे जाकर 'मेक लोकल फॉर ग्लोबल' जैसे उद्घोष वाक्य देकर स्थानीय उत्पादन पर जोर दे रहे हैं। अनेक प्रदेशों की सरकारें 'वन डिस्टिक वन प्रोडक्ट' योजना को तेजी से लागू कर रही हैं। इसी प्रकार रेलवे ने 'वन स्टेशन वन प्रोडक्ट' की योजना को भी लागू किया है। यह स्वाभाविक भी है। भारत के अनेक जिले जैसे गुरुग्राम, बेंगलुरु, पुणे, हैदराबाद, लखनऊ, भोपाल, ऐसे हैं जिनकी कुल जनसंख्या विश्व के अनेक छोटे देशों की जनसंख्या से अधिक है। अतः हमें स्थानीय उत्पादन और स्थानीय खपत को बढ़ावा देना उपयोगी होगा और यदि लोग स्थानीय स्वदेशी चीजों को खरीदेंगे, स्वभाविक है इससे लघु एवं कुटीर उद्योगों का को बढ़ावा मिलेगा और जैसे ही लघु कुटीर उद्योग बड़ी मात्रा में बनेंगे तो बड़ी मात्रा में रोजगार का सृजन भी होगा।

सहकारिता

भारत में सहकारिता के विभिन्न प्रयोग आजादी के पश्चात से ही शुरू हो गए थे। सहकारिता का सरल शब्दों में अर्थ मिलजुलकर उद्योग चलाना ही होता है। किंतु व्यवहारिक रुप से भी इसे बड़ी मात्रा में लागू किया गया है। भारत में अमूल, इफको, कृभको, इंडियन कॉफी हाउस, विभिन्न एग्रीकल्चर सोसाइटी, कॉपरेटिव बैंक, इस सहकारिता की सफलता की गाथाएं कह रहे हैं। और इनसे लाखों ही नहीं बल्कि करोड़ों लोगों का रोजगार जुड़ा है। अर्थ चक्र का संचालन हो रहा है।

जब कोई पूंजीपति अपना व्यवसाय या उद्योग चलाने के लिए श्रम को एकत्र करता है, टेक्नोलॉजी का प्रयोग करता है, तो उसे पूंजीवादी अर्थव्यवस्था कहते हैं। किंतु जब श्रम मिलकर (लोग मिलकर), पूंजी एकत्र करते हैं और टेक्नोलॉजी आदि का प्रयोग करते हुए अर्थ का सृजन करते हैं तो उसे सहकारिता उद्योग कहते हैं। यद्यपि भारत में लंबे समय से सहकारिता देशभर में ही है, किंतु सफल व बड़े प्रमाण पर तो इसे कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात जैसे प्रदेशों में ही लागू किया जा सका है। आवश्यकता है यदि हर जिले में, और केवल ग्रामीण क्षेत्र में ही नहीं, नगरीय क्षेत्र में भी सहकारिता आधारित उद्योग रचना की जाती है तो गुणवत्तापर्ण रोजगार का सृजन बड़े प्रमाण में होगा।

सहकारिता का एक लाभ यह भी रहता है उससे उत्पन्न रोजगार गुणवत्तापूर्ण होता है। सहकारिता के क्षेत्र में आय का आवंटन 1 : 9 तक का रहता है अर्थात यदि वहां सबसे छोटे कर्मचारी की आय 10000 रू. है तो सबसे बड़े वाले की 100000 रू. तक की होगी। किंतु पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में इसकी कोई सीमा नहीं रहती। यह अनुपात 1 : 2000 भी हो सकता है। इससे असमानता बढ़ती है और परिणामस्वरूप उत्पादन कमजोर होता है। अंततः अर्थ और रोजगार दोनों ही कमजोर हो जाते हैं। सामाजिक विषमता बढ़ती है। अतः सहकारिता आधारित उद्योग यदि देशभर में चलते हैं तो वह विशाल देश में सामाजिक समरसता बनाए रखने के लिए भी अत्यंत उपयोगी होंगे।

चीन से रोजगार की चुनौती

चीन से भी भारत के रोजगार क्षेत्र को एक बड़ी चुनौती मिल रही है। उसका कारण सरल व स्पष्ट है कि हम भारतीयों को बड़ी आदत लगी है, सस्ता माल लेने की, चाहे वह घटिया स्तर का ही क्यों न हो। चीन बड़ी मात्रा में अपने यहां मैन्युफैक्चरिंग करके भारत के बाजार में अपना सामान डालता है। 5000 से अधिक वस्तुएं ऐसी हैं जो चीन से बनकर भारत में आती है। चीन स्टील और एलुमिनियम व डीजल प्रोडक्ट से लेकर सामान्य झालर, पतंग की डोर तक भारत की तुलना में सस्ता बनाकर भेजता है। और केवल चीन से बनकर ही सीधे नहीं आती बल्कि अनेक चीनी उत्पाद दक्षिण पूर्वी देशों जैसे वियतनाम, इंडोनेशिया, मलेशिया आदि से भी आते है। फिर भारत से चीन का व्यापार इतना असंतुलित है कि गत एक वर्ष का व्यापार घाटा लगभग 8500 अरब रुपए अर्थात 103 बिलियन डॉलर तक का था। जब बच्चों के खिलौनों से लेकर मोबाइल तक चीन से बने बनाए आते हों तो स्वभाविक

है लाखों रोजगार भी चीन को जाते हैं जो कि भारत में रह सकते हैं।

चीन अपने यहां से भारत के मुकाबले इतने सस्ता माल बनाकर कैसे भेजता है, यह अनुसंधान और बहस का विषय हो सकता है। इसके साथ–साथ सरकारें चाइनीज इंपोर्ट पर रोक क्यों नहीं लगा पा रही, यह भी सोचने का विषय हो सकता है। किंतु एक बात सत्य है कि भारत का लाखों रोजगार चीन के द्वारा आयातित वस्तुओं के कारण से भारत से बाहर जा रहा है, छीना जा रहा है। पूरे देश को इसे एक चुनौती माननी चाहिए। जैसे सैनिक सीमा की रक्षा करते हैं, ऐसे ही हमें बाजार की रक्षा करनी होगी। 2017–18 में चले 'स्वदेशी स्वीकार–चाइनीज़ बहिष्कार' के राष्ट्रीय स्वदेशी सुरक्षा अभियान की भावना को जन–जन तक पहुंचाना होगा। यह केवल एक दुश्मन देश से दूरी बनाने के लिए नहीं, बल्कि अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए और अपने रोजगार के अवसरों का निर्माण करने के लिए करना होगा।

विश्व में उपलब्ध रोजगार, नौकरियों के प्रति दृष्टिकोण

अनेक अर्थशास्त्रियों का मत है कि हमारे युवा जो विदेशों में चले जाते हैं और वहां जाकर छोटी बड़ी नौकरियां करते हैं, उससे भारत की अर्थव्यवस्था को धक्का पहुंचता है। वे इसे ब्रेन ड्रेन भी मानते हैं अर्थात यहां की बौद्धिक शक्ति का पलायन होना। किंतु अपने देश की बड़ी युवा आबादी को जिसे यहां पर रोजगार (नौकरियों) के अवसर पर्याप्त नहीं मिलते, बाहर जाना स्वभाविक है। विश्व में सर्वाधिक विदेश में बसे नागरिक (डायस्पोरा) भी भारत का ही है। लगभग 1.85 करोड़ भारतीय लोग विदेशों में बसते हैं। किंतु यह भी सच है कि यही विश्व में गए भारतीय, भारत की अर्थव्यवस्था व रोजगार की एक ताकत भी हैं। वे प्रवासी भारतीय भारत में भी 100 अरब डॉलर लगभग 8200 अरब रुपए प्रतिवर्ष भेज भी रहे हैं। जिससे भारत का अर्थ तंत्र मजबूत हो रहा है। व्यापार घाटा कम होता है और रुपए की डॉलर के मुकाबले में कीमत ठीक बनी रहती है। इसलिए विश्व भर में फैली हुई नौकरियों के प्रति हमारे को एक दूसरे दृष्टिकोण से भी सोचना चाहिए।

भारत की आबादी अभी और बढ़ेगी। इसकी 2027 तक 164 करोड़ तक बढ़ने की संभावना है। इसलिए यदि हमारे युवा विश्व भर में नौकरियां की खोज में जाते हैं और वहां प्राप्त कर लेते हैं तो इसमें कोई बुराई नहीं। इसके अतिरिक्त वे भारत के सांस्कृतिक राजदूत भी बनते हैं। विश्व भर में भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति, भारत के प्रति एक आदर का भाव पैदा करते हैं। इसलिए इस विषय को भी हमें

उसी सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए और उसी अनुसार किस देश में कितनी और कैसी नौकरियों की आवश्यकता है, इसका अध्ययन करना होगा। फिर सरकारों द्वारा या प्राइवेट संस्थाओं द्वारा भी उसी अनुसार यहां पर अपनी लेबर फोर्स को प्रशिक्षित करके भेजने से उपयोगी होगा। उदाहरण के तौर पर यूरोप में इस समय पर 5 लाख से अधिक पैरामेडिक लेबर की आवश्यकता है, यदि हम उन्हें यहां पर प्रशिक्षित कर सकें तो यह संभव है। इसी प्रकार विश्व के अनेक प्रमुख देशों की बूढ़ी होती आबादी को हमारे सेवाभावी युवाओं की आवश्यकता है। डा. देवी शेट्टी (बेंगलूरू) ने इस विषय में विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। जिसका अध्ययन कर इस विषय में आगे बढ़ा जा सकता है और लाखों रोजगार सृजित किए जा सकते हैं।

स्टार्टअप्सः रोजगार का बड़ा क्षेत्र

गत कुछ वर्षों से विश्व में और भारत में स्टार्टअप्स की चर्चाएं है। स्टार्टअप अर्थात नए उद्यम, नए तरीके से शुरुआत की, छोटी फंडिंग से। यह उद्यमिता का स्पष्ट क्षेत्र है। युवाओं में इसके प्रति अच्छी रूचि भी बनी है। भारत में इस समय पर 82 हजार से अधिक स्टार्टअप्स हैं और भारत विश्व का तीसरा बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है। गत 2021–22 के वित्त वर्ष में ही भारत ने 14 हजार स्टार्टअप्स (पंजीकृत) प्रारंभ किए हैं। जिसका अर्थ यह हुआ कि भारत ने प्रतिदिन 4 से अधिक स्टार्टअप शुरू किए हैं। इनमें कुल 2 हजार अरब रुपए का फंड निवेश हुआ। देशी–विदेशी कुल मिलाकर 24 अरब डॉलर। भारत में यह हर वर्ष, हर मास इसमें तरक्की हो रही है और यह होनी भी चाहिए। इतना ही नहीं, यह स्टार्टअप्स देश के 600 से अधिक जिलों से आ रहे हैं। यानि भारत के छोटे कस्बों, जिलों से भी युवा अब स्टार्टअप्स प्रारंभ कर रहे हैं। उद्यमिता भारत के खून में है। भारत को न केवल इस प्रकार के स्टार्टअप्स की प्रक्रिया को तेज करना होगा, बल्कि इसे एक संस्कृति के नाते से ही विकसित करना होगा। जब भारत विश्व में 33–34 प्रतिशत का उत्पादन करता था तो यह उद्यमिता ऐसी ही उस समय पर थी। भारत में सूर्योदय हो रहा है और भारत फिर से उसी उद्यमिता के क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है। फिर यह स्टार्टअप्स केवल टेक्नोलॉजी और बड़े क्षेत्रों में ही नहीं आ रहे, बल्कि कृषि क्षेत्र में, स्वास्थ्य में ग्रामीण क्षेत्रों में सब जगह आ रहे हैं। देशभर में हर महाविद्यालय हर विश्वविद्यालय में इसके लिए स्टार्टअप केंद्र बनने चाहिए और देश को इसके लिए संसाधन भी लगाने चाहिए। आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक संगठनों के साथ–साथ

सरकार को टीम वर्क करते हुए इस विषय पर तेजी से आगे बढ़ना चाहिए।

युवा विद्यार्थियों को उद्यमी बनने हेतु 5 विचार

1. स्टार्ट अर्निंग, अर्ली अर्न, व्हाईल यू लर्न, भारत के युवाओं को यह अभ्यास बना हुआ है कि वह आयु के 24–25 साल तक ने केवल पढ़ाई लिखाई करते रहते हैं बल्कि वे सोचते हैं कि कमाई करने की उम्र ही इसके बाद प्रारंभ होती है। तब तक केवल किसी तरह से डिग्री, डिप्लोमा प्राप्त करते जाना, उसके लिए ही परिश्रम करते रहना होता है। जबकि विश्व भर का अनुभव ऐसा है कि जो युवा पढ़ाई करते हुए ही कुछ कमाई शुरू कर देते हैं वह अधिक सफल होते हैं। यूरोप, अमेरिका में 70 प्रतिशत से अधिक युवा महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में आने के बाद अपनी पढ़ाई का खर्चा स्वयं अर्जित करते हैं। अगर हमारे युवा भी 16–17 वर्ष की आयु से अर्न व्हाईल यू लर्न की प्रक्रिया अपनाते हैं तो वह सफल उद्यमी भविष्य के हो सकते हैं। जमशेदजी टाटा, एप्पल के स्टीव जॉब, बाबा रामदेव से लेकर ओयो के रितेश अग्रवाल व टीएसी के त्रिशनीत अरोरा तक के सैकड़ों उदाहरण ऐसे हैं जिन्होंने छोटी आयु में कमाई शुरू की तो वह बड़े सफल उद्यमी आगे चलकर सिद्ध हुए।

2. 'डोंट बी जॉब सीकर, वी जॉब प्रोवाइडर' तो आजकल संपूर्ण भारत में युवाओं के लिए एक आदर्श वाक्य जैसा बनता जा रहा है। भारत में नौकरी करने का विचार इतना प्रबल है कि वह सामाजिक समीकरण का विषय बन गया है। ग्रामीण क्षेत्र में तो यदि युवा के पास नौकरी नहीं है फिर चाहे वह कितना भी अच्छा कमाता हो, तो भी उसका विवाह तक होना कठिन हो जाता है। यह 'नौकरी ही रोजगार है!' का सिद्धांत अंग्रेजी मानसिकता का परिणाम है। जिसे वर्षों तक हमने ढोया है। किंतु अब इससे आगे बढ़कर उद्यमिता (जॉब प्रोवाइडर) में जाने को युवा तैयार हैं। आगे इसी अंक में हमने 10 ऐसे सफल उद्यमियों के उदाहरण दिए भी हैं।

3. थिंक न्यू, थिंक बिग, थिंक आउट ऑफ बॉक्सः देश के प्रमुख उद्यमियों का जीवन अध्ययन करने के पश्चात यह ध्यान में आया है कि युवा उम्र में यह गुण अवश्य होता है कि बड़ा सोचना, नया सोचना और कुछ हटकर सोचना। स्टीव जॉब द्वारा बड़ा और हटकर सोचा गया तो विश्व को पहली एक ट्रिलियन डालर वाली कंपनी मिली। बाबा रामदेव द्वारा योग को सामान्यजन के स्वास्थ्य व अर्थअर्जन का विचार नया था, अलग हटकर था, इसने भारत के

पतंजलि को 30 हजार करोड रुपए की कंपनी के रूप में स्थापित कर दिया। इसी विचार से बॉस नाम की विश्व की सबसे बड़ी ऑडियो कंपनी खड़ा करने में सफल हुए। इसी विचार से मार्क जुकरबर्ग फेसबुक को स्थापित करने में सफल हुए। भारत ही नहीं विश्व के किसी भी बड़े उद्योग के पीछे यह विचार अवश्य रहता है। आज की स्टार्टअप्स (कल्चर) संस्कृति भी वास्तव में इसी तीसरे विचार का प्रकटीकरण है।

4. सामान्यता पांच व्यक्तिगत गुण किसी भी व्यक्ति में होने चाहिए, जो उद्यमिता के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता है। वह है – इच्छाशक्ति, परिश्रमी, साहसी, नई तकनीक के प्रति जागरूक और विश्वसनीयता। किसी भी सफल और स्थाई उद्यमी में यह पांच व्यक्तिगत गुण होते ही हैं। हमारे युवाओं को भी इनको धारण करना चाहिए। इसके लिए अध्ययन व चर्चा करनी चाहिए।

5. 'नेशन फर्स्ट, स्वदेशी मस्ट' यह एक नारा न होकर हर एक युवा का ध्येय वाक्य होना चाहिए। किसी भी तरह से केवल पैसा कमाना, यह तो किसी भी युवा का लक्ष्य नहीं हो सकता। उसे अपने देश की गरीबी व बेरोजगारी दूर करना तथा अन्य सामाजिक कार्यों में प्रवृत्त होना व उसमें योगदान देना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा वह केवल पैसे कमाने वाली मशीन जैसा हो जाएगा। जिसे व्यक्तिगत रूप से भी कोई सफल नहीं कहा जा सकता। दूसरी बात है, स्वदेशी का प्रयोग न केवल आर्थिक कारणों से बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक कारणों से भी स्वदेशी का प्रयोग करना चाहिए। अपने व्यवहार में, अपनी सोच में, अपने परिवार के रहन–सहन वेशभूषा में, सबमें अपना भारतीय परंपरा और वैचारिक प्रतिबद्धता पर गर्व रहना चाहिए, यही स्वदेशी होना है।

सफल उद्यमियों के कुछ उदाहरण

1. कृष्णा यादवः उत्तर प्रदेश के खुर्जा की रहने वाली कृष्णा यादव की एक अच्छी सफल गाथा है। वह 1994–95 में अपने पति के साथ दिल्ली आई। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, यहां तक कि अपने तीन बच्चों को दो समय की रोटी देने की स्थिति नहीं थी। उसने सड़क के किनारे कुछ सब्जियां लगाकर कार्य शुरू किया। फिर आचार बनाकर बेचने का कार्य शुरू किया। वे और उसके पति बेचते थे। किंतु ज्यादा सफलता नहीं मिल रही थी। फिर खादी ग्रामोद्योग से उसने प्रशिक्षण प्राप्त किया। उससे उसको इसे मूल्य संवर्धित करके कैसे बेचना, इसका तरीका आया। धीरे–धीरे कार्य आगे बढ़ने लगा और आज वह 1000 महिलाओं को

कार्य (रोजगार) भी दे रही है। कृष्णा पिकल्स नाम से उसकी अचार की 3 बडी कंपनियां हैं। दिल्ली से लेकर बिहार के सीतापुर तक उसके अचार बनाने की कंपनियों में कुल 1000 महिलाएं अपना रोजगार पाती हैं। 7 करोड़ से अधिक का उसका टर्नओवर हो गया है। दिल्ली व केंद्र सरकार तथा अनेक अन्य संस्थाओं ने उसको सम्मानित किया है। कैसे एक अनपढ़ महिला अपने पति के साथ यदि परिश्रम करती है, धैर्य रखती है, बड़ा बनने की सोचती है, तो वह सफल हो सकती है। इसका एक प्रेरक कथा है – कृष्णा पिकल की कृष्णा यादव।

2. गौरव लस्सी वाला (स्टूडेंट लस्सी): गौरव गोरखपुर का रहने वाला है, पढ़ाई करते समय ही उसने गांव से पहले दूध लाकर, फिर दही बेचकर कमाई करनी शुरू की। उसे विचार आया कि इसमें मूल्य समर्थन करके कमाई की जा सकती है और अपने ही कॉलेज के सामने उसने 'स्टूडेंट लस्सी' नाम से एक रेहडी लगा ली। धीरे–धीरे कार्य फैला लिया। कठिनाइयों के बावजूद आज उसकी 11 रेड़िडयां स्टूडेंट लस्सी के नाम से चलती हैं। 10 लाख रूपया हर मास की उसकी सेल है। 30 लोगों को उसने रोजगार दिया हुआ है। यह एक छोटा, किंतु जीवंत उदाहरण है। कोई भी काम छोटा नहीं और रोजगार सोच में संसधानों में नहीं।

3. बकरी वाला बना करोड़पतिः बुलंदशहर के रहने वाले संदीप ने दिल्ली में सम्पन्न स्वावलंबी भारत की एक कार्यशाला में बताया कि वह यद्यपि जाट समाज से है किंतु उसने बकरी पालन का कार्य शुरू किया। 20–22 बकरियों के साथ यद्यपि सामाजिक मान्यता न मिलने से उसे प्रारंभ में कठिनाई आई, किंतु इस कार्य में सरकार की योजनाओं का लाभ उठाकर जब कार्य करना प्रारंभ किया तो आज उसने 60 से अधिक लोगों को बकरी पालन के कार्य से अपना रोजगार निर्माण करने में सहायता की है। स्वयं भी उसका टर्नओवर 3 करोड़ से अधिक का हो चुका है। सरकार की योजनाओं का कैसे लाभ उठाया जाए और कोई भी कार्य छोटा नहीं होता, यदि इन दोनों विचारों का सफल संगम कहीं देखना है तो संदीप बकरी वाला उसका प्रत्यक्ष जीवंत उदाहरण है।

4. त्रिशनीत अरोराः वह लुधियाना के रहने वाले हैं। बहुत पढ़ाई नहीं कर सके। केवल 11वीं कक्षा तक की पढ़ाई की, किंतु उन्हें शुरू से ही कंप्यूटर मोबाइल इसका शौक था। अपने शौक को उन्होंने रोजगार का माध्यम बनाने की सोची। एथिकल हैकिंग का कार्य प्रारंभ किया। शुरुआत की मेहनत के बाद उन्हें कार्य मिलने लगा। पहले लुधियाना पुलिस और बाद में सीआरपी और फिर कुछ बैंकों

से कान्ट्रैक्ट मिलने लगे। बाद में इसी त्रिशनीत अरोरा ने सिक्योरिटी सॉल्यूशंस की एक कंपनी बनाई – टीएसी (त्रिशनीत अरोरा कंपनी)। आज यह कंपनी 400 से अधिक युवाओं को रोजगार दे रही है। 200 करोड़ का उसका टर्नओवर है। मुंबई में उसने अपना हेड ऑफिस बनाया है। यानि यदि आपमें इच्छाशक्ति है, फिर चाहे आपकी आयु छोटी है, पढ़ाई अधिक नहीं है, घर से आर्थिक मदद भी नहीं है, लेकिन आप ठान लेते हैं – परिश्रमी हैं, इच्छाशक्ति है, फिर चाहे सफलता मिलती ही है। त्रिशनीत अरोड़ा ऐसी पीढ़ी के नवयुवकों के लिए एक प्रेरणा स्तंभ हैं।

5. एमबीए चायवालाः इसके बारे में तो आपने सुना ही होगा कि गुजराती युवक रोहित जिसकी इच्छा थी कि वह किसी अच्छे संस्थान से एमबीए करें, किंतु वह तो पूरी नहीं हो पाई। उसी एमबीए कॉलेज के सामने ही उसने चाय बेचने का अपनी छोटा सा ठेला शुरू किया। धीरे–धीरे, अलग–अलग प्रकार की चाय बनाने और फिर गुणवत्तापूर्ण चाय बनाने की उसने प्रक्रिया प्रारंभ की। नए विचार, नई प्रक्रिया अपनाने से उसे सफलता मिली और आज वह सारे भारत के युवाओं के सामने इस बात का उदाहरण है कि कैसे आप छोटी आयु में बिना संसाधन के अपना स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं और उसमें पूरी तरह सफल भी हो सकते हैं, भारत ऐसे ही युवाओं से अब भरने लगा है।

10 भारत के युवा उद्यमी रोजगार प्रदाता

भारत के युवा कैसे तेजी से “I will not be job seeker I will be job provider” के विचार पर चलते हुए आगे बढ़ रहे हैं, ऐसे भारत के युवा उद्यमियों की कुछ जानकारी यहां दी जा रही है।

1. दीपिंदर गोयलः युवा दीपिंदर गोयल पंजाब के मुक्तसर के रहने वाले हैं। इस समय इनकी आयु 38 वर्ष है। जोमैटो जो कि एक फूड डिलीवरी कंपनी है, उसके संस्थापक सीईओ हैं। इस समय इनकी व्यक्तिगत कुल संपत्ति 2200 करोड़ के लगभग है। जोमैटो कंपनी जो केवल भारत ही नहीं बल्कि सुदूर देशों जैसे श्रीलंका, फिलीपींस, वियतनाम, कनाडा मिस्र आदि में भी काम करती है। यह कंपनी 2010 में प्रारंभ हुई। उससे पहले 2008 में फूडी पे नाम से दीपेंद्र ने अपनी कंपनी शुरू की थी, जिसे बाद में जोमैटो में बदल दिया गया। आज इस कंपनी में सीधे तौर पर 5000 से अधिक कर्मचारी कार्य करते हैं। और देश के रोजगार निर्माण व अर्थ सृजन में उसने एक बड़ी भूमिका निभाई है। एक सामान्य परिवार से प्रारंभ करके और कैसे कोई 12 साल में ही ईतनी ऊंचाई तक पहुंच सकता है

दीपेंद्र गोयल उसके सफल उदाहरण हैं।

2. दिव्यांक तुरखियाः तूरखिया युवा मुंबई के रहने वाले हैं। Media.net नाम से ऑनलाइन विज्ञापन व्यवसाय की इनकी कंपनी है, अब आयु 38 साल है। केवल 9 साल की उम्र में ही इन्होंने काम करना शुरु कर दिया था, बाद में पिताजी से 50000 रू. लेकर विज्ञापन ऑनलाइन का व्यवसाय शुरू किया फिर तेजी से तरक्की की और 2016 में भारत की तीसरी बड़ी ऑनलाइन कंपनी को बेच दिया 7000 रू. करोड़ में। आज वे छोटी उम्र में ऑनलाइन विज्ञापन की दुनिया के बादशाह माने जाते हैं उनकी व्यक्तिगत संपत्ति 14,000 करोड़ रुपए तक की है। 3000 से अधिक लोगों को सीधे रोजगार दिया हुआ है।

3. नितिन व निखिल कामतः यह दोनों भाई बेंगलुरु के रहने वाले हैं। नितिन की आयु 40 वर्ष तो निखिल की 34 वर्ष है। छोटी आयु में ही दोनों भाइयों ने बड़ी कमाई करने की सोची। छोटे–छोटे काम करने के बाद अंततः इन्होंने जरोधा नाम से अपनी कंपनी प्रारंभ की जो वित्तीय सेवा कंपनी है। यह कंपनी खुदरा और संस्थागत ब्रोकिंग, मुद्राएं, कमोडिटी ट्रेडिंग, मौद्रिक काज आदि में काम करती है। इसने कितनी तेजी से विस्तार किया है कि आज इन दोनों भाइयों की व्यक्तिगत संपत्ति 24000 करोड रूपये तक की है। हजारों युवाओं को इन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कार्य दिया है। अर्थ का सृजन किया है। भारतीय स्टॉक एक्सचेंज में 15 प्रतिशत तक का योगदान इनकी कंपनियों के मार्फत हुए निवेश से है। मनुष्य तू बड़ा महान है... इसकी सार्थक कृति दो भाई हैं।

4. वैभव, सुजीत कुमार व अमोद मालवीयः यह तीनों मित्र पहले फ्लिपकार्ट ई–कॉमर्स कंपनी में काम करते थे। वहीं पर ही दोस्ती हुई। रहने वाले छोटे कस्बों के हैं। इन्हें भी विचार सुझा कि फ्लिपकार्ट के संस्थापक सचिन और बिन्नी बंसल की तरह हम भी अपना कार्य शुरू करें। नौकरी न करके नौकरी देने वाले बनें। और इन्होंने उड़ान नाम से अपनी कंपनी स्थापित की जो कि आज भारत ही नहीं दुनिया की सबसे युवा और स्टॉक एक्सचेंज में लिस्टेड कंपनी मानी जाती है। जिसकी कुल वैल्यूएशन 14000 करोड रुपए तक की है। ये जॉब प्रोवाइडर का उत्तम उदाहरण है क्योंकि अब सैकड़ों युवाओं को रोजगार दे भी रहे हैं।

5. बिन्नी बंसल व सचिन बंसलः फ्लिपकार्ट के संस्थापक यह दोनों मित्र दिल्ली आईआईटी में इकट्ठे पढ़ते थे। मूलतः रहने वाले चंडीगढ़ के हैं। आयु भी अब जाकर 40 हुई होगी। किंतु उन्होंने पहले अमेजॉन ई–कॉमर्स कंपनी में नौकरी

की, लगभग 2 वर्ष तक नौकरी करके और वहां के अनुभव को हम स्वयं का उद्यम लगाने में कैसे कर सकते हैं। इसमें उपयोग किया और अमेजॉन के बराबर ही फ्लिपकार्ट कंपनी बना ली। और केवल 11 वर्षों में ही यह कंपनी इतनी बड़ी हो गई कि जब 2018 में उन्होंने इसको वॉलमार्ट को बेचा तब यह 1,41,000 करोड़ं रुपए की डील हुई यह विश्व इतिहास में ई–कॉमर्स कंपनी की अब तक की सबसे बड़ी डील थी।

अभी वह दोनों अलग–अलग रूप से अपनी कंपनी चला रहे हैं और इन्होंने भी हजारों युवाओं को रोजगार दिया है।

6. दीपक गर्गः यह युवा हरियाणा के रहने वाले हैं। गुरुग्राम के, 39 वर्ष आयु है। इन्होंने रीविगो लॉजिस्टिक कंपनी की स्थापना की। यह कंपनी ट्रक ड्राइवरों के जीवन के सुधार कर आय बढ़ाने के विचार पर आधारित है। रिले ट्रक ट्रैकिंग इनका आईडिया है। अर्थात दिल्ली से चला ट्रक ड्राइवर कोलकाता तक जाए, आए तो 15 दिन घर से बाहर रहने की बजाए वह शाम को अपने घर आ जाए और आगे का ड्राइवर ट्रक आगे ले जाए।

इनके देश भर में 3000 से अधिक ट्रक हैं और इस कंपनी का कारोबार एशिया, ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका तक में अब फैल गया है। आईआईटी कानपुर से बीटेक व आई आई एम लखनऊ से एमबीए करने के बाद दीपक ने यह कंपनी स्थापित की। आज 6000 से अधिक ड्राइवर और अन्य लोग इनकी कंपनी में कार्यरत हैं। रोजगार व अर्थ सृजन में दीपक गर्ग का भी महत्वपूर्ण योगदान है उनकी संपत्ति भी 3200 करोड रुपए से अधिक की है।

7. रितेश अग्रवालः उनके पूर्वज मूलतः हरियाणा के है। किंतु उनका जन्म कटक उड़ीसा में हुआ। अभी उम्र केवल 29 वर्ष है। वह प्रसिद्ध होटल श्रंखला ओयो के संस्थापक व सीईओ हैं इन्होंने 13 साल की उम्र में सिम बेचने से काम की शुरुआत की। 2013 में पढ़ाई पूरी किए बिना दिल्ली आ गए और होटल बुक करने का कार्य शुरू किया। अमरीका की प्रसिद्ध फैलोशिप को पहली बार में पास कर 1 लाख डॉलर यानि 80 लाख रुपए का अमेरिका से इनाम जीता। उसी से ही ओयो रूम्स कंपनी स्थापित किया और उसे आगे बढ़ाने का काम किया। वह विश्व के दूसरे सबसे कम उम्र के अरबपति बने। आज सारे भारत में ओयो रूम्स जाना पहचाना नाम है हजारों लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कार्य उनकी कंपनी के माध्यम से मिलता है।

8. आदिति गुप्ताः वह झारखंड में जन्मी, 1988 में पढ़ाई पूरी करने के बाद 2012 में उसने मेनसस्टूपिडर कॉमिक जो युवतियों को उनकी कठिनाईयों के बारे में कहानियों के माध्यम से प्रशिक्षित करती है, की कंपनी चलाई। इस समय पर उसने 23500 संस्थानों के माध्यम से 13 लाख से अधिक युवतियों को इस विषय में प्रशिक्षित किया है। उसकी कंपनी इस समय 50 करोड़ की है और 400 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार दे रही है। फोर्बस–30 अंडर 30 में उसका नाम 2014 की लिस्ट में आया। वह एक सफल उद्यमी युवती है केवल 35 साल की आयु में ही।

9. चित्रा गुरनानीः इस युवती ने तो कमाल ही किया, हैदराबाद के स्कूल ऑफ बिजनेस में पढ़ाई की और अपने पति अभिषेक के साथ मिलकर टूर एंड ट्रेवल की एक ऑनलाइन कंपनी मनाई। 2009 में अपने शौक को ही उसने अपना कैरियर बनाया और आज विश्व भर के 125 स्थानों पर वह 12500 एक्टिविटीज कराती है और 30 लाख से अधिक उसकी साइट के यूजर हैं। वह युवाओं की प्रेरणा स्रोत है, सैकड़ों लोगों को उसने भी प्रत्यक्ष रोजगार दिया हुआ है।

10. श्रद्धा शर्माः श्रद्धा शर्मा 'युवा स्टोरी' नाम से सफल उद्यमियों की और सफल व्यक्तित्वों की कहानियां लिखने का उसने उपक्रम प्रारंभ किया। अभी केवल 42 वर्ष की हैं। बिहार के छोटे से कस्बे में जन्मी, पटना में पढ़ाई पूरी की, किंतु अब उसकी 'युवा स्टोरी (Youth Story)' भारत ही नहीं दुनिया में लाखों लोगों द्वारा पढ़ी जाने वाली सफल कहानियों की वेबसाइट है। 12 भाषाओं में वह सफल व्यक्तित्व के बारे में लिखती है, लाखों को उसने उद्यमिता में जाने हेतु प्रेरित किया है।

स्वावलंबी भारत अभियान, रोजगार सृजन का अभिनव प्रयोग

भारत में बेरोजगारी, गरीबी दूर करने व भारत को एक समृद्ध, स्वाभिमानी देश के नाते से स्थापित करने के लिए 12 जनवरी 2022 को विधिवत रूप से स्वावलंबी भारत अभियान की घोषणा हुई। यद्यपि 1 वर्ष पूर्व ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आर्थिक संगठनों ने मिलकर यह फैसला अहमदाबाद की एक बैठक में किया था। जिनमें भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ, लघु उद्योग भारती, ग्राहक पंचायत, सहकार भारती व स्वदेशी जागरण मंच थे। इसके अतिरिक्त बाद की बैठकों में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद व राजनीतिक क्षेत्र, सेवा भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, विश्व हिंदू परिषद, विद्या भारती, भारतीय शिक्षण मंडल, पर्यावरण गतिविधि आदि संगठन भी जुड़ गए। यह तय हुआ कि भारत में आर्थिक

और सामाजिक संगठनों को मिलकर एक व्यापक अभियान चलाना चाहिए।

देश के 754 जिलों में फैली बेरोजगारी को मिटाने हेतु जिला केंद्रित रोजगार एवं अर्थ सृजन के विभिन्न प्रयोग प्रारंभ करने चाहिए। इसके लिए विचार परिवार से बाहर चल रहे संगठनों का भी सहयोग लिया जाए और इसलिए जोहो कॉर्प, वक्रांगी, दे आसरा, आइआईडी, चोयल ग्रुप, जागृति यात्रा आदि अनेक संगठनों को भी साथ जोड़ा गया।

अभी देश के 700 जिलों में इसकी टीमों का गठन हो गया है। इसमें तीन प्रकार के कार्य तय किए गए हैं। चल रहे रोजगार सहयोग केंद्रों, कौशल विकास केंद्रों, उद्यमिता प्रोत्साहन कार्यों या ऐसे कार्यों में लगे व्यक्तियों, संस्थाओं को सहयोग करना। क्योंकि पहले से ही देश भर में सेवा भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, विश्व हिंदू परिषद, लघु उद्योग भारती, भारत विकास परिषद आदि अनेकों संगठनों द्वारा कंप्यूटर सेंटर, सिलाई केंद्र, सेल्फ हेल्प ग्रुप, ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण केंद्र आदि ऐसे प्रयोग चल ही रहे हैं, जो विभिन्न प्रकार का कौशल विकास एवं रोजगार प्रशिक्षण का कार्य कर रहे हैं, इन सबको मिलाकर, इनमें समन्वय बनाना। इनकी गति व परिणाम बढ़ाना।

इस अभियान में संलग्न संगठनों द्वारा हजारों केंद्रों के माध्यम से लाखों लोगों की रोजगार सृजन की प्रक्रिया बन रही है। ऐसे सैकड़ों केंद्र इस अभियान के शुरू होने के बाद भी खोले गए हैं। इसके अतिरिक्त देशभर में जिला रोजगार सृजन केंद्र खोले गए हैं। अभी लगभग 400 जिलों में यह केंद्र खुल चुके हैं और इस वर्ष में सभी जिला केंद्रों पर ऐसे केंद्र खुल जाएंगे।

इन केंद्रों का उद्देश्य युवाओं को नौकरियों के साथ–साथ स्वरोजगार के बारे में प्रेरित व प्रशिक्षित करना, उन्हें सरकारी योजनाओं की जानकारी देना और आवश्यकता अनुसार उनके उद्यमिता के प्रयोगों में सहयोग करना है। बड़ी मात्रा में इन रोजगार सृजन केंद्रों व अभियान के माध्यम से युवा उद्यमिता में मुड़ने भी लगे हैं।

सितंबर 2022 में देश भर में उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन किए गए। कुल 2825 कार्यक्रमों के द्वारा लगभग 5 लाख युवाओं को उद्यमिता में प्रोत्साहित, प्रशिक्षित किया गया। देश के लगभग 625 जिले इसमें सम्मिलित हुए। 5000 से अधिक सफल उद्यमियों को युवाओं के बीच में ले जाकर उनके सफल प्रयोगों के प्रत्यक्ष वर्णन द्वारा यह कार्य हुआ। सभी प्रांतों में इसके कार्यकर्ताओ की प्रशिक्षण कार्यशाला चल ही रही हैं।

डिजिटल टैक्नोलॉजी का उपयोग Mysba.co.in

डिजिटल टैक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए mysba.co.in नाम की वेबसाइट के द्वारा सब प्रकार के प्रकल्पों को प्रत्येक युवा तक पहुंचाने का लक्ष्य है। डिजिटल वालंटियर व डिजिटल कार्यकर्ता भी इसके माध्यम से लाखों की संख्या में बनाए जा रहे हैं। लक्ष्य स्पष्ट है कि देश के प्रत्येक युवक को उद्यमिता, स्वरोजगार, स्टार्टअप, एफपीओ आदि के माध्यम से अपना रोजगार स्वयं निर्माण करने की ओर प्रेरित, प्रशिक्षित, प्रोत्साहित और सहयोग करना।

मानसिकता परिवर्तन हेतु एक व्यापक प्रयोग जन जागरण का लिया जा रहा है। वास्तव में जो अंग्रेजों ने नौकरी का विमर्श हमारे युवा के जनमानस के अंदर स्थापित किया उसे बदलकर उद्यमिता और स्वरोजगार के विमर्श (Narrative) पर लाने के लिए व्यापक प्रयोग और कार्यक्रम इस अभियान के अगले चरणों में आगामी दो–तीन वर्षों में लेने होंगे। एक–एक युवक तक इस संदेश को पहुंचाना होगा। तभी भारत एक समृद्ध, गरीबी मुक्त और रोजगार युक्त प्रेरणादाई देश के नाते से उभर सकता है।

आर्थिक सामाजिक संगठन ही अभियान चलाएंगे

यह कार्य सरकार अथवा राजनीतिज्ञों द्वारा संभव नहीं। बल्कि देश के आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक नेतृत्व व संगठनों के समर्पित कार्यकर्ताओ द्वारा ही संभव है। इसलिए जिन्होंने स्वयं रोजगार दिया है, ऐसे सफल उद्यमियों की प्रेरक कथा सुनाने वाले, अन्य अन्य कारण से जिनका युवाओं के अंदर मान सम्मान है ऐसे सब व्यक्तियों एवं संगठनों को एकजुट आना होगा। ताकि सैकड़ों वर्षों से इस देश को व्यथित कर रही बेरोजगारी की इस महामारी से पार पाया जा सके। यह सरल कार्य तो नहीं है किंतु असंभव भी नहीं है। एक महा जनजागरण का यह स्वाबलंबी भारत अभियान, भारत के सभी जिलों ही नहीं, खंडों, नगरों, गांवों तक में जा रहा है। देशभर में फैले राष्ट्रीय संगठनों के व्यापक नेटवर्क, समर्पित कार्यकर्ताओं, उच्च तकनीक का प्रयोग व समविचारी संगठनों और व्यक्तियों के व्यापक समन्वय व तालमेल से यह अभियान भारत की इस महामारी को दूर करने में अवश्य सफल होगा ऐसा विश्वास है।

तेजी से स्वावलंबन के पथ पर बढ़ रहा भारत

भारत जो 1947 के समय पर अत्यंत दीन हीन, गरीब, भूखा व बीमारियों से

ग्रस्त देश था, गत 75 वर्षों में ही विशेषकर गत 8–10 वर्षों में तेजी से स्वावलंबन के पथ पर बढ़ता जा रहा है। 1947 में जहां प्रति व्यक्ति आय मात्र 265 रू. थी, वह आज 500 गुना बढ़कर 124000 रू. प्रति व्यक्ति हो गई है।

यही नहीं जिस तेजी से भारत आर्थिक प्रगति कर रहा है। 2047 तक जब स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्व होंगे, तब विकसित देश के नाते स्थापित हो जाएगा। प्रति व्यक्ति आय 15000 डॉलर जो अभी 2500 डॉलर प्रति व्यक्ति है, हो जाएगी। ऐसी घोषणा अधिकांश अर्थशास्त्रियों ने की है।

इसी प्रकार साक्षरता दर जो 1950–51 में मात्र 17 प्रतिशत थी, वह आज बढ़कर 91 प्रतिशत तक हो गई है। भारत की मध्यमान आयु दर भी जो 1950–51 में 32 वर्ष थी आज बढ़कर 64 वर्ष हो गई है। भारत का बजट जो उस समय पर मात्र 30 हजार करोड़ था आज बढ़कर 45 लाख करोड़ का हो गया है। भारत की आबादी जो उस वक्त 50 करोड़ के आसपास थी, आज बढ़कर 140 करोड हो गई है।

विश्व का अन्नदाता बना भारत

भारत की उस समय पर अन्न की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। यहां तक कि 1963 में जब लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री थे, तो भारत के पास अपनी आबादी को खिलाने लायक रोटी नहीं थी। तो उन्हें "हर सोमवार को रात्रि भारतीय लोग उपवास रखें" ऐसी अपील करनी पड़ी, ताकि भूखे लोगों को भी कुछ भोजन दिया जा सके। अमेरिका से पीएल–480 जैसे शर्मनाक समझौते करने पड़े ताकि अपने लोगों का पेट भरा जा सके। किंतु आज 2022–23 में स्थिति यह है कि हम विश्व में सबसे अधिक चीनी उत्पादक देश हैं। दूसरे क्रमांक पर चावल और गेहूं उत्पादक देश है। यही नहीं चावल के विश्व निर्यात के हिस्से में 40 प्रतिशत अकेले भारत का ही है। गेहूं और दालों के बारे में भी न केवल हम आत्मनिर्भर है, बल्कि 14–15 प्रतिशत निर्यात भी करते हैं। एक भूखे नंगे देश से आज विश्व के 100 से अधिक देशों का अन्नदाता भारत बना है। आज भारत का कृषि निर्यात 50 अरब डॉलर यानी 4,12,000 करोड़ रूपये से अधिक का हो गया है। रूस यूक्रेन युद्ध के बाद तो अमेरिका से लेकर यूरोप, ऑस्ट्रेलिया व अफ्रीका तक के देश अपने खाद्यान्नों पूर्ति के लिए भारत की तरफ ही विश्वास के साथ देख रहे हैं।

विश्व की फार्मेसी बनता भारत

यही बात दवा निर्माण के बारे में भी है। दवाइयां विशेषकर जेनरिक, के कुल विश्व उत्पादन में 22 प्रतिशत के साथ आज भारत है और उसे विश्व की फार्मेसी कहा जाता है। सस्ती व गुणवत्तापूर्ण दवाइयों के हम निर्माता हैं। कोरोना के समय पर भारत ने जिस तेजी व विश्वसनीय स्तर पर वेक्सीन का निर्माण किया और विश्व के 80 देशों में उसे भेजा, अपनी संपूर्ण आबादी का दो बार टीकाकरण किया, उससे संपूर्ण विश्व चकित है और दुनिया भारत का दवा व वैक्सीन क्षेत्र में लोहा मानती है।

भारत का डिजिटल क्षेत्र में वर्चस्व

इसी प्रकार डिजिटल के क्षेत्र में भारत की तरक्की से सारा विश्व आश्चर्य में है। 2021–22 में ही भारत ने 254 अरब डॉलर के आईटी और सॉफ्टवेयर के एक्सपोर्ट्स किए हैं। भारत का आईटी क्षेत्र लगातार तरक्की कर रहा है और इसकी पूरी संभावना है कि अगले 7 वर्षों में, अर्थात 2030 तक ही भारत एक ट्रिलियन डॉलर के आईटी और सॉफ्टवेयर के एक्सपोर्ट्स करने लग जाए। यहां यह बताना भी उपयोगी होगा कि सऊदी अरेबिया जिसका तेल निर्यात दुनिया में दूसरे स्थान पर है उसका 2021–22 में ही कुल तेल निर्यात 150 अरब डालर का है जबकि भारत के आईटी और सॉफ्टवेयर का एक्सपोर्ट्स 254 अरब डॉलर का है। भारत के युवाओं ने अपने प्रकार के तेल के कुएं (आईटी सॉफ्टवेयर) बेंगलुरु से लेकर गुरुग्राम तक खोज लिए हैं। भारत ने 5जी के विषय में भी चीनी कंपनियों के आगे न झुकते हुए अपना ही विकसित किया। भारत की टीसीएस (Tata Consultancy, Infosis), विप्रो, एचसीएल, विश्व भर में अपनी गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है तो हजारों कंपनियों के माध्यम से लाखों युवा भी इससे रोजगार पाते हैं।

आयुध का निर्यातक बनता भारत

कुछ यही बात आयुध निर्माण के बारे में भी है। भारत विश्व का सर्वाधिक आयुध (रक्षा सामान) का आयातक देश रहा है। भारत का प्रति वर्ष का रक्षा खर्च 50 अरब डालर तक का है। किंतु गत कुछ वर्षों में ही भारत ने स्वदेशी निर्मित आयुध सामान का न केवल बड़ी मात्रा में निर्माण करना शुरू किया है, बल्कि अपने आयात में कमी भी की है। और अनेक देशों को भारत से निर्यात भी बढ़ाया है। 2012–13 में केवल 500 करोड रुपए का आयुध निर्माण निर्यात करने वाला देश अब 30000 करोड़ रूपये से ऊपर का निर्यात करने को तैयार है।

भारत का यूपीआई नंबर 1

विश्व भर में भारत के यूपीआई यानी स्थानांतरण (धन का) सिस्टम की चर्चा है। फ्रांस जर्मनी अमेरिका तक के लोग उसका अध्ययन कर रहे हैं। भारत का यूपीआई ट्रांजैक्शन अमेरिका और चीन के हो रहे कुल डिजिटल ट्रांजेक्शन से भी अधिक है। भारत बहुत तेजी से अपनी विशाल आबादी को दो बार पूरी तरह से करोना की वैक्सीन का टीकाकरण कर पाया तो उसका प्रमुख कारण भी डिजिटल (covin-app) था। भारत का रोड नेटवर्क जो 50–60 के दशक में अत्यंत दयनीय स्थिति का माना जाता था आज वह विश्व स्तरीय हो गया है। भारत प्रतिदिन 38 किलोमीटर सड़क निर्माण कर रहा है। विश्व का दूसरा बड़ा रोड और रेल नेटवर्क भारत के पास है। 1960 के दशक में भारत में केवल 28 एयरपोर्ट थे, अब 137 हैं। भारत का इसरो विश्व के चार सबसे विश्वसनीय अंतरिक्ष संगठनो में माना जाता है। मंगल पर केवल दो ही देश अपना यान भेज पाए।

मजबूत अर्थव्यवस्था भारत की

भारत कभी एक अत्यंत दुर्बल अर्थव्यवस्था माना जाता था। यहां तक कि 1991 में भी हमें अपना सोना गिरवी रखना पड़ा था। ताकि देश का अर्थ चक्र चल सके। किंतु आज भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था है। 3.5 ट्रिलियन डॉलर के साथ। वह 200 साल तक अपने ऊपर शासन किए इंग्लैंड (3.1 ट्रिलियन डालर) से आगे निकल चुका है और इसके 2027 तक ही 5.5 ट्रिलियन डॉलर के साथ विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने और 2047 तक 26 ट्रिलियन के साथ विश्व की क्रमांक 1 की अर्थव्यवस्था बनने की भविष्यवाणी अधिकांश वैश्विक अर्थशास्त्री कर रहे हैं।

सीआईआई (चेंबर ऑफ इंडियन इंडस्ट्री) की एक पिछली रिपोर्ट ने यह घोषणा ही की है कि भारत यदि अपनी सभी युवा शक्ति को रोजगार की प्रक्रिया में लाने में सफल हुआ तो वह 40 ट्रिलियन डालर तक की अर्थव्यवस्था बन सकता है जबकि अमेरिका इस समय पर 24 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था है।

विश्व में सबसे बड़ी लेबर फोर्स हमारी

2047 तक ही विश्व की कुल लेबर फोर्स में 25 प्रतिशत का हिस्सा भारतीयों का होगा। अभी भी यह 90 करोड़ है और 2030 तक यह 100 करोड़ हो जाएगी। इसके अलावा भी विश्व भर में भारत का डायस्पोरा (विश्व में भारतीय लोगों की

संख्या) 1.8 करोड़ है और जो विश्व के अन्य किसी भी देश की अपेक्षा अधिक है। ये भारतीय 100 अरब डालर प्रति वर्ष भारत में भेज रहे हैं। यह लगातार बढ़ रही है।

भारत के लघु एवं कुटीर उद्योगों से लेकर यूनिकॉर्न तक की कंपनियां और फिर कृषि से लेकर आयुध के क्षेत्र तक न केवल भारत आत्म निर्भरता के पथ पर तेजी से बढ़ रहा है बल्कि वह विश्व पटल पर भी तेजी से अपनी छाप छोड़ रहा है और वैश्विक नेतृत्व की स्थिति में आ रहा है।

स्वावलंबी भारत का सपना होगा साकार

उक्त विचारों का सारांश यही है कि भारत का युवा अब उठ खड़ा हुआ है। वह तेजी से उद्यमिता की और बढ़ने लगा है। स्वरोजगार की और बढ़ने लगा है। कृषि में नए प्रयोग होने लगे हैं। स्टार्टअप्स की गति तेजी से बढ़ ही रही है।

भारत जो कभी दुनिया पर निर्भर था, अब स्वदेशी और स्वावलंबन की राह पर तेजी से बढ़ रहा है। भारत की युवा शक्ति भारत को पूर्ण स्वावलंबी भारत बनाने के अभियान में जुटी है। इनके अथक प्रयत्नों से संपन्न भारत, रोजगार युक्त भारत, विश्व का मार्गदर्शक भारत, का स्वप्न शीघ्र साकार होगा। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है।

।।जय स्वदेशी जय भारत।।

संदर्भ सूचि

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Economy_of_India
2. https://journalsofindia.com/youth-in-india-2022-report/
3. https://www.hindustantimes.com/india-news/indias-total-fertility-rate-drops-from-2-2-to-2-0-reveals-nfhs-5-report-101652208129487.html
4. https://economictimes.indiatimes.com/news/india/india-will-become-40-trillion-economy-by-2047-mukesh-ambani/videoshow/95700749.cms
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Economy_of_the_United_States#:~:text=The%20nation's%20economy%20is%20fueled,sources%20differ%20on%20their%20estimates
6. https://unemploymentinindia.cmie.com/
7. https://government.economictimes.indiatimes.com/news/education/aishe-2020-21-gross-enrolment-ratio-in-higher-education-improves-for-all-social-groups/97430286#:~:text=Of%20the%20total%20enrolment%2C%2055.5,34.5%20percent%20of%20the%20enrolment.
8. https://www.statista.com/statistics/1286736/india-estimated-growth-of-student-enrolments-in-higher-education/
9. https://www.businessinsider.in/careers/news/iaf-gets-7-5-lakh-applications-for-3000-agniveer-positions-and-requests-to-extend-deadline/articleshow/92691766.cms
10. https://unemploymentinindia.cmie.com/
11. https://hdr.undp.org/system/files/documents/hdp-document/2022mpireportenpdf.pdf
12. https://www.census2011.co.in/census/city/365-mumbai.html#:~:text=Total%20no.,total%20population%20of%20Mumbai%20city.
13. https://www.globalhungerindex.org/india.html
14. https://www.researchgate.net/publication/363173220_LITERACY_RATE_IN_INDIA_IN_2022#:~:text=The%20literacy%20rate%20is%2077.70,NSO%20(2021%20and%202022).
15. https://www.google.com/search?q=percentage+of+enrollment+of+higher+education++in+india+&ei=6ezpY4_PJNasz7sPk_u1uAs&ved=0ahUKEwjP5_3ZgpL9AhVW1nMBHZN9DbcQ4dUDCA8&uact=5&oq=percentage+of+enrollment+of+higher+education++in+india+&gs_lcp=Cgxnd3Mtd2l6LXNlcnAQAzIICCEQoAEQwwQ6CggAEEcQ1gQQsAM6CQgAEBYQHhDxBDoFCAAQhgM6BQgAEKIESgQIQRgASgQIRhgAUPUMWKFIYKpKaAJwAXgAgAG2AYgB1BSSAQQwLjE2mAEAoAEByAEIwAEB&sclient=gws-wiz-serp
16. https://www.oxfamindia.org/knowledgehub/workingpaper/survival-richest-india-story
17. https://www.oecd.org/dev/world-economy-millennial-perspective-historical-statistics.htm#:~:text=Published%20in%202001%2C%20The%20Economy,world%20GDP%20nearly%20300%20fold.
18. https://www.businesstoday.in/latest/economy-politics/story/this-economist-says-britain-took-away-usd-45-trillion-from-india-in-173-years-111689-2018-11-19
19. https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2022-04/Discussion_Paper_on_Workforce_05042022.pdf (page 5)
20. https://mea.gov.in/aseanindia/MGC.htm?57
21. https://tradingeconomics.com/india/ease-of-doing-business
22. https://www.moneycontrol.com/news/business/economic-survey-2023-upi-accounted-for-52-of-indias-total-digital-transactions-in-fy22-9970741.html
23. https://www.statista.com/statistics/1155602/india-start-up-recognized-businesses/#:~:text=India's%20startup%20economy%20has%20been,been%20officially%20recognized%20by%20DPIIT.
24. https://www.business-standard.com/article/current-affairs/at-76-6-bn-india-s-military-spending-third-highest-in-world-sipri-report-122042500616_1.html#:~:text=%22India's%20military%20expenditure%20of%20USD,based%20defence%20think%2Dtank%20said.
25. https://www.thehindu.com/news/national/highways-construction-touches-record-37-km-per-day-gadkari/article34221788.ece
26. https://newsonair.com/2023/01/19/india-to-become-26-trillion-economy-by-2047-ey-report/#:~:text=An%20EY%20report%20has%20said,among%20the%20top%20developed%20economies.
27. https://indbiz.gov.in/india-can-become-us40-trillion-economy-by-2047-if-the-working-population-is-employed-cii/

स्वदेशी गीत

स्वावलंबी स्वाभिमानी भाव जगाना है,
चलों गाँव के ओर, हमें फिर देश बनाना है ।।

हर घर में गो–माँ की सेवा, पशुधन का हो पालन,
दूध, दही, घी, मठ्ठा, लस्सी, हर घर में हो सेवन।।
स्वच्छ रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे, भाव जगाना है,
गौ पालन से खुशहाली हमें गांव में लाना है।।
चलें गाँव के ओर..............

गाँव में होगी जैविक खेती, जमीं के निचे पानी,
अनाज, सब्जी, फूल फल से, सजेगी धरती रानी।।
स्नेह और सहकारिता का, भाव जगाना है,
कृषि–आधारित समृद्धि, हमें गाँव में लाना है।।
चलें गाँव के ओर..............

ग्रामोद्योग विस्तार से सबका, निश्चित हो रोजगार,
जिएं सादगी से सब रखें, मन में उच्च–विचार।।
भारत माता की जय हो, यह भाव जगाना है,
राम–राज्य के सपने को, फिर साकार कराना है।।
चलें गाँव के ओर..............

ग्राम–नगर–वन के वासी, सब भारत की संतान है,
ऊंच–नीच का भेद भुलाकर, करते सब मिल काम है ।।
समरसता का गीत गाकर, कदम बढ़ाना है,
भारत मां का अब फिर से हमें मान बढ़ाना है।
चलें गाँव के ओर.......

—

उद्घोष

गांव शहर की एक पुकार
उद्यमिता और स्वरोजगार

स्वरोजगार अपनाएंगे
देश समृद्ध बनाएंगे

एफपीओ स्टार्टअप चलाएंगे
देश का रोजगार बढ़ाएंगे

जब भी बाजार जायेंगे
सामान स्वदेशी लाएंगे

चायनीज वस्तु छोड़कर
बोलो वंदेमातरम

जय स्वदेशी -
जय जय स्वदेशी

सहकारिता हम अपनाएंगे
रोजगारयुक्त देश बनाएंगे

कला, कौशल सीखो एक बार
नहीं होंगे, कभी बेरोजगार

कौशल विकास
देश का विकास

कृषि, कौशल उद्यमिता अपनाओ
देश को गरीबीमुक्त बनाओ

Start Earning Early
Earn while you learn

Don't be Job Seeker
Be Job Provider

Think Big, Think New
Think out of Box

Nation First
Swadeshi Must